International Journal of Home Science 2019; 5(3): 298-303

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(3): 298-303
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 27-07-2019
Accepted: 30-08-2019

प्रतिमा कुमारी
शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

मृदुला भारती
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान
विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
प्रतिमा कुमारी
शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार के प्रति अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन

प्रतिमा कुमारी एवं मृदुला भारती

सारांश
बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है ।वास्तव में जीवन का वह स्वर्णिम समय है जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है । खास कर बच्चों में 6–12 वर्ष का समय बच्चों के लिए अति महत्वपूर्ण काम होता है । क्योंकि इस काल में बच्चों में विभिन्न प्रकार के आदतों का विकास होता है । ये आदत गलत और सही दोनों प्रकार के हो सकते है । जहाँ सही एवं अच्छी आदतों से बच्चों का उचित विकास होता है ठीक इसके विपरित गलत और अनुचित व्यवहार से बच्चों का विकास बाधित हो जाता है । इस शोध के अन्तर्गत प्रत्यक्षीकरण मापनी का निर्माण किया गया तथा बच्चों के व्यवहारों से संबंधित सभी जानकारियों को प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्षीकरण सूची तैयार की गई । शोधकर्ता द्वारा अध्ययन कार्य में ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णात्मक विश्लेषण का प्रयोग एवं सोउद्देश्यपूर्ण न्यायदर्श प्रणाली का अनुप्रयोग किया गया । तत्पश्चात विश्लेषण के उपरान्त स्पष्ट हुआ कि 24: बच्चों को चोरी करने की आदत है । जबकि 76: बच्चे ऐसे है जो चोरी नही करते हैं 46: बच्चे झूठ बोलते है । जबकि 54: ऐसे बच्चे है जो झूठ नहीं बोलते, 24: बच्चों में अंगुठा चुसने की आदत है ।परन्तु 76 बचचों में अंगुठा चुसने की आदत नहीं है । 30: बच्चों में मुँह से नाखुन काटने की आदत है जबकि 70: बच्चों की आदत नहीं है । 30: बच्चों में मुँह से नाखुन काटने की आदत है जबकि 70: बच्चे ऐसा नहीं करते एवं 40: बच्चों में बिस्तर गीला करने की आदत है जबकि 60: बच्चों में बिस्तर गीला करने की आदत नहीं है ।

कूटशब्द : बालक, अभिभावक, समस्यात्मक व्यवहार

प्रस्तावना
बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है । वास्तव में जीवन का वह स्वर्णिम समय है जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है । साधारण बोल – चाल की भाषा में जन्म से लेकर परिपक्वता प्राप्त होने तक की अवस्था को बाल्यावस्था कहा जाता है। इस अवस्था के बच्चे अपने चारों ओर के वातावरण पर नियंत्रण करना सीख लेते है ।
बाल्यावस्था को दो अवस्थाओं में बाँटा गया है । प्रारंभिक बाल्यावस्था लगभग 2–6 वर्ष तक की अवस्था को कहते तथा उत्तर बाल्यावस्था लगभग 6–12 वर्ष तक की अवस्था को कहते हैं ।
सामाजिक अनुकूलन के लिए जीवन के ये प्रारंभिक वर्ष सबसे अधिक महत्वपूर्ण होते है । पूरे जीवन का नींव बाल्यावस्था में ही बन कर तैयार हो जाता है । इस आरम्भिक वर्षो में ही व्यक्ति की अभिवृत्ति और स्वभाव की नींव पड़ जाती है । इस समय व्यक्ति के स्वरूप को वांछित स्वरूप में बदलना सहज होता हे क्योंकि इस समय की तुलना कुम्हार की कच्ची मिट्टी से की जाती है जिसे कुम्हार निश्चित एवं निर्धारित रूप से बदल सकता है । उसे एक निश्चित आकार दे सकता है । बालक के भावी जीवन को उचित दिशा देने के लिए उसके बचपन पर विशेष ध्यान देना जरूरी है ।
उत्तर बाल्यावस्था का मुख्य विशेषता समाजीकरण है । इस अवस्था के बच्चों का अधिकांश समय स्कूल तथा दोस्तों के साथ व्यतीत होता है तथा जीवन की वास्तविकताओं को समझने का अवसर मिलता है । इस अवस्था का बच्चों के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । इस आयु के बच्चे नकारबादी बन जाते हैं तथा माता–पिता के आदेशों का विरोध करने लगते है । इस अवस्था के बालक का स्वभाव बहुत और लगभग सब बातों का उत्तर 'न' या 'नहीं' में देते है । 7 वर्ष की आयु में वह उदासीन होते है और अकेला रहना पसंद करते है । 8 वर्ष की आयु में उसमें अन्य बालकों से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने की भावना बहुत प्रबल हो जाती है ।

इस अवस्था के बच्चे खेलने में ज्यादा समय व्यतीत करते है । बाल्यावस्था के प्रारम्भिक दिनों में बच्चे बहुत जिद्दी स्वभाव के रहते हैं परन्तु बाल्यावस्था के अन्त तक पहुंचते–पहुंचते सामान्यता इसका लोप हो जाता है। 9 – 12 वर्ष तक की आयु में विद्यालय में उसके लिए कोई आकर्षण नही रह जाता है। वह कोई नियमित कार्य न करके कोई महान और रोमांचकारी कार्य करना चाहते है । बच्चा बचपन में बहुत कुछ सीखता है । उसी समय उसे वांछित रूप दिया जा सकता है परन्तु इन्हें बाद में बदल पाना कठिन हो जाता है ।

इस अवस्था के बालकों में समस्यात्मक व्यवहार भी पाई जाती है । व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ और मूल्य भी इसी आयु में स्थापित होती है, जो समय के साथ–साथ पक्के और दृढ़ होते जाते हैं । बाल्यावस्था, बाल्य जीवन मे अनेकानेक बातों से प्रभावित होकर अच्छे या बुरे मार्ग पर बढ़ता है । सही ढंग से निर्देशित और नियंत्रित बचपन उज्जवल भविष्य के लक्ष्य को प्राप्त करता है । ऐसे व्यक्ति किसी भी समाज की पूँजी होते है बचपन कोरा कागज होता है, इस पर सुन्दर चित्रकारी बने इसके लिए बाल्यावस्था में उचित शिक्षण और प्रशिक्षण जरूरी है । शिशु किसी आदत को लेकर जन्म नहीं लेता है वह तो अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तथा जटिल नवीन वातावरण से सामांजस्य स्थापित करने के लिए कुछ प्रारम्भिक क्रियाएँ करता है जो उत्तरोतर उसकी आदत बन जाती है ।

बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है । वास्तव में मानव जीवन का वह सर्वांगीण समय है । जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है । इस अवस्था में ही व्यक्ति की अभिवृत्ति और स्वभाव की नींव पड़ जाती है । जो समय के साथ–साथ पक्के और दृढ़ होते जाते हैं ।

इस अवस्था के बालकों में समस्यात्मक व्यवहार भी पाई जाती है, जब बच्चें का व्यवहार सामान्य व्यवहार से हट कर होता है तो उसे जीवन में समायोजन करने में कठिनाईयाँ होती है । सामान्य बालक जब वातावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं तो समस्यात्मक बन जाते है । बालक किसी आदत को लेकर जन्म नही लेता है वह तो अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जटिल एवं नवीन वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने के लिए कुछ प्रारम्भिक क्रियाएँ करता है जो उत्तरोतर उसकी आदत बन जाती है । ऐसे बालक का वर्तमान और भविष्य सभी बिगड़ जाता है । ऐसा व्यवहार मात – पिता, घर, परिवार और समाज के लिए समस्यात्मक बन जाते है ।

समस्यात्मक बालक किसी वर्ग विशेष के नहीं है ये बालक किसी भी परिवार में हो सकते हैं इनमें न तो जन्मजात कोई शारीरिक या मानसिक हीनता होती है ओर न ये अपराधी या समाज विरोधी प्रवृति के होते है ।

वातावरणीय समायोजन के दौरान जब परिस्थितियाँ अत्यन्त जटिल हो जाती है उनकी इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती उचित मार्गदर्शन तथा स्नेह का अभाव जो निरन्तर मानसिक तनाव की स्थिति में उनका व्यवहार समस्यात्मक बना देता है ।

बालक के भावी जीवन को उचित दिशा देने के लिए उसके अचपन पर हवशेष ध्यान देने की जरूरत है । उसी समय वांछित रूप दिया जा सकता है परन्तु बाद में बदल पाना कठिन होता है । समस्यात्मक व्यवहार स्थायी नहीं होते है । माता–पित प्रारम्भ से ही बालक की समस्या का निदान उचित निर्देशन द्वारा करें तो उसका व्यवहार थोड़े समय में सामान्य हो सकता है ।

बचपन कोरा कागज होता हे इन पर सुन्दर चित्रकारी बने इसके लिए बाल्यावस्था में उचित शिक्षण और प्रशिक्षण जरूरी है । समस्यात्मक व्यवहार प्रायः असामान्य परिस्थितियों के कारण बच्चों में पैदा हो जाते है जिसका दुष्प्रभाव अत्यन्त घातक प्रभावित होता है । जैसेअंगुठा चूसना, नाखून काटना, बिस्तर गिला करना आदि इसलिए ये आवश्यक है कि बालक किसी क्षेत्र में अनुशासन विहीन हो रहा है उसको अनदेखा न करे जो उसे उदण्ड व अनुशासन विहीन कर रहा है ।

इसी सोच विचार के बीच यह शोध ''11–12 वर्ष के बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार के प्रति अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन'' विषय को चयन किया है । इस अध्ययन द्वारा यह देखना है कि समाज मे कितने बच्चों में इस प्रकार के समस्यात्मक व्यवहार जैसे झूठ बोलना, चोरी करना, बिस्तर गीला करना, अंगूठा चूसना, मूँह से नाखून काटना आदते पड़ी । क्या अभिभावक बच्चों के समस्या को दूर करने का प्रयास करते है ।

- क्या बच्चे का समायोजन के दौरान जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा ?
- क्या परिवार तथा समाज में उनको उचित मार्गदर्शन एवं प्रेम नहीं मिल पाया ?
- क्या उन्हें कठोर नियंत्रण में रखा गया ?
- क्या उनकी इच्छाओं की पूर्ति नही हो सकी ?
- क्या बच्चे तनावग्रस्त रहते है ?
- क्या उन्हें उचित पोषण मिल पा रहा है ?

बालको के अधिकार, आवश्यकताओं की पूर्ति एवं पारिवारिक वातावरण तथा बालकों के व्यवहार को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों पर प्रकाश डालने तथा उपयुक्त सभी जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु इसे अध्ययन के लिए चूना गया ।

शोध का उद्देश्य

शोध का उद्देश्य निम्निलिखित है ।

- 6 – 12 वर्ष के बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार में अंगूठा चूसने की आदत अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन ।
- 6 – 12 वर्ष के बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार में मूँह से नाखून काटने के आदत के प्रति अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन ।
- 6 – 12 वर्ष के बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार में बिस्तर गीला करने के आदत के प्रति अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन ।
- 6 – 12 वर्ष के बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार में झूठ बोलने के आदत के प्रति अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन ।
- 6 – 12 वर्ष के बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार में चोरी करने के आदत के प्रति अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन ।

शोध प्रविधि

प्रतिदर्श के स्त्रोत : प्रतिदर्श के श्रोत के रूप में हजारीबाग जिले के शहरी क्षेत्र हुरहुरू, मटवारी, कुम्हार टोली, रामनगर मोहल्ला के अभिभावकों को लिया गया ।

प्रतिदर्श : प्रतिदर्श के रूप में 250 अभिभावक माता–पिता को याद्धछिक विधि द्वारा चयन किया गया । जिनके बच्चे 6 – 12 वर्ष के है ।

उपकरण : स्व–निर्मित प्रत्यक्षीकरण सूची का उपयोग किया गया।

प्रदत संकलन की प्रविधि : प्रदत संकलन स्वयं शोधकर्त्ता द्वारा प्रश्नों को पूछ कर किया गया । किसी प्रकार का सन्देह होने पर उसे स्पष्ट किया गया ।

प्रदत विश्लेषण की प्रक्रिया : प्रदतों का विश्लेषण वर्णनात्मक एवं गुणात्मक प्रविधि द्वारा किया गया ।

प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण– ग्राफ प्रस्तुति

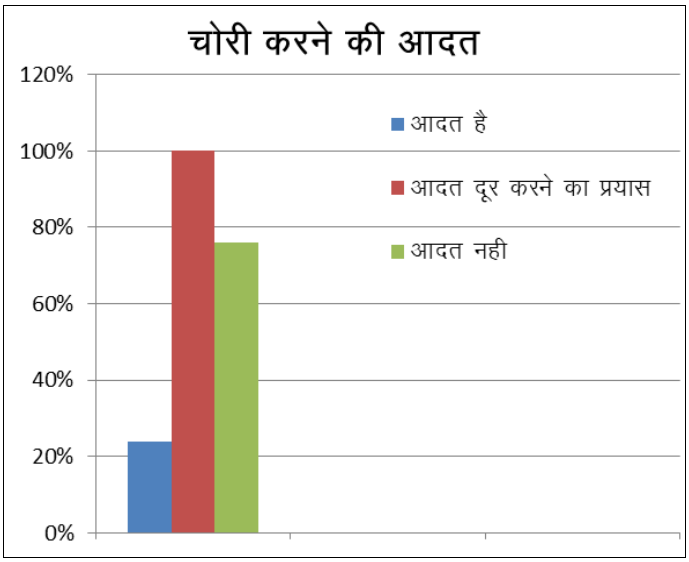

समस्यात्मक व्यवहार – चोरी करना

प्रत्यक्षीकरण से प्राप्त आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 24: बच्चों को चोरी करने की आदत है शायद आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने पर बच्चों में चोरी की लत पड़ गई, जबकि 76: बच्चे ऐसे है जो चोरी नहीं करते हैं । माता – पिता अपने बच्चों को उचित अनुचित व्यवहार में अन्तर करना सीखाये हो, सही मार्गदर्शन मिलने पर बच्चों में ऐसी आदत का विकास नहीं होता है । 100: ऐसे अभिभावक है जो अपने बच्चों की इस आदत को सुधारने का प्रयास करते है ।

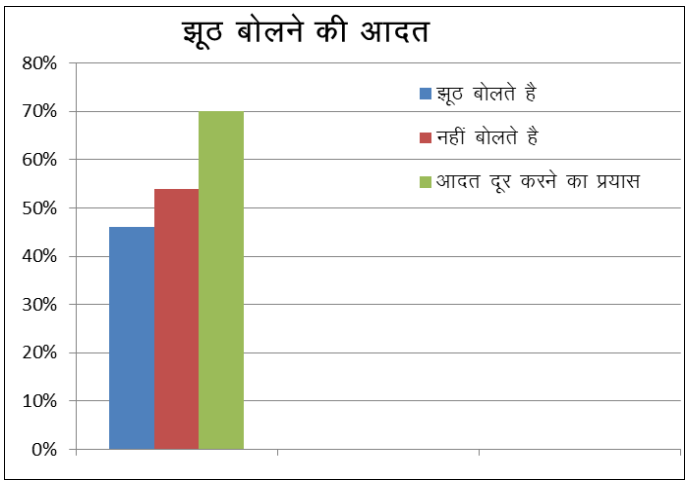

समस्यात्मक व्यवहार –झूठ बोलना

प्रत्यक्षीकरण से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 46: बच्चे झूठ बोलते है । दण्ड से बचने के लिए झूठ बोलते है, जबकि 54: ऐसे बच्चे हैं जो झूठ नहीं बोलते है । उनमें उच्च चरित्र तथा नैतिक गुणों का विकास देखा गया । जबकि 70: अभिभावक अपने बच्चे की झूठ बोलने की आदत को दूर करने का प्रयास करते है ।

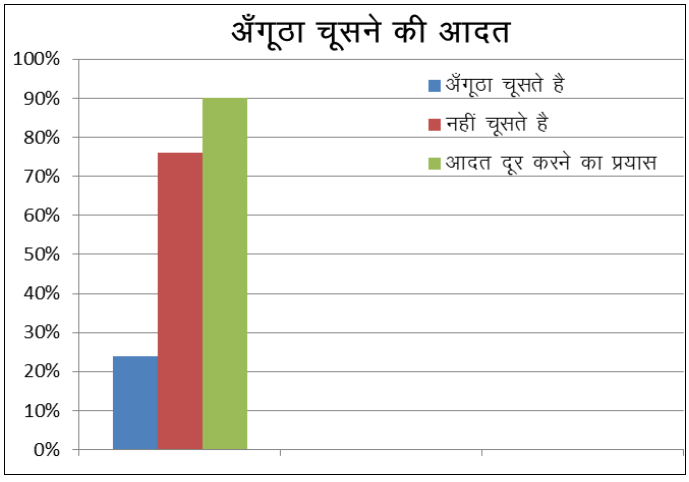

समस्यात्मक व्यवहार – अँगूठा चूसना

प्रदत्तों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 24: बच्चों में अँगूठा चूसने की आदत है परन्तु 76: बच्चों में अँगूठा चूसने की आदत नहीं है तथा 90: ऐसे अभिभावक है जो अपने बच्चे की अँगूठा चूसने की आदत को दूर करने का प्रयास करते हैं जबकि 10: ऐसे अभिभावक हैं जो अपने बच्चे की अँगूठा चूसने की आदत को दूर करने का प्रयास नहीं कर पाते क्योंकि वह कामकाजी है । पर्याप्त समय के अभाव में वह अपने बच्चे पर ध्यान नहीं दे पाते ।

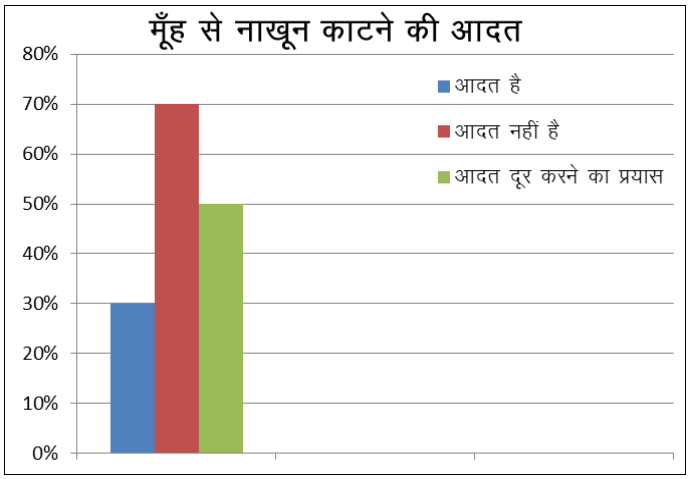

समस्यात्मक व्यवहार – मूँह से नाखून काटना

आँकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि 30: बच्चों में मूँह से नाखून काटने की आदत है । जबकि 70: बच्चे को मूँह से नाखून नहीं काटने की आदत है । यह एक मनोशारीरिक समस्यात्मक व्यवहार है जो संवेगात्मक असंतुलन की स्थिति से उत्पन्न होता है। जबकि 50: अभिभावक अपने बच्चे की इस आदत को दूर करने का प्रयास करते है। अगर इस आदत को बचपन में दूर नहीं किया तो बड़े हो कर बच्चे अपनी इस आदत से हीन भावना से ग्रस्त हो सकते है ।

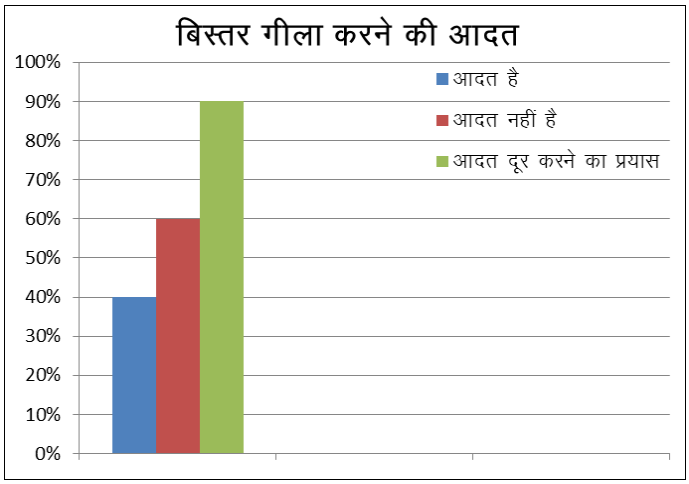

समस्यात्मक व्यवहार – बिस्तर गीला करना

प्रदतों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 40: बच्चों में बिस्तर गीला करने की आदत है क्योंकि इन्हें प्रारंभ से प्रशिक्षण नहीं दिया गया जबकि 60: बच्चों में बिस्तर गीला करने की आदत नहीं है उन्हें प्रारंभ से ही समय–समय पर शौचालय जाने का प्रशिक्षण दिया गया । 90: अभिभावक अपने बच्चे से इस समस्या को दूर करने का प्रयास करती है जबकि 10: अभिभावक समय के अभाव के कारण इस समस्या को अपने बच्चों से दूर करने का प्रयास नहीं कर पाते ।

सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है । वास्तव में मानव जीवन का स्वर्णिम समय है जिसमें उसका सर्वांगिण विकास होता है । इस समय व्यक्ति के व्यवहार को वांछित रूप में बदलना सहज होता है क्योंकि इस अवस्था की तुलना कुम्हार की कच्ची मिट्टी से की जाती है जिसे एक निश्चित आकार दे सकते है । इस अवस्था के बच्चों में समस्यात्मक व्यवहार भी पाई जाती है । जो समय के साथ–साथ पक्के और दृढ़ होते जाते है । जन्म के बाद प्रत्येक प्राणी को नया वातावरण प्राप्त होता है । वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने के लिए प्राणी को अपनी कुछ जन्मजात आदतों का त्याग करना पड़ता है ओर नयी बातों के साथ समायोजन करना पड़ता है । सामान्य बालक जब वातावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते है जो समस्यात्मक बन जाते है । जब बच्चे का व्यवहार सामान्य व्यवहार से हट कर होता है तो उसे जीवन में समायोजन करने में कठिनाई होती है ऐसा असामान्य व्यवहार बालक के जीवन में अन्धकार भर देता है । उसका वर्तमान और भविष्य सभी बिगड़ जाता है । ऐसे बालक स्वयं अपने लिए माता–पिता, घर–परिवार और समाज के लिए समस्या बन जाते है। माता–पिता के असहानुभूतिपूर्ण तथा अमनोवैज्ञानिक व्यवहार के कारण बालक में प्रारम्भ से ही कुछ अनुचित आदतें पड़ जाते हैं जिसका दूष्प्रभाव अत्यंत घातक होता है जैसे अंगूठा चूसना, नाखून मूँह से काटना, बिस्तर गीला करना, झूठ बोलना, चोरी करना आदि आदते पर जाती है ।

निष्कर्ष

अध्ययन द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए

- अध्ययन द्वारा यह देखा गया कि 75: बच्चे किसी न किसी प्रकार के समस्यात्मक व्यवहार से ग्रस्त हैं उनमें मनोशारीरिक समस्यात्मक व्यवहार के बालक जिनकी किन्हीं कारणों से शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकी जैसे पोषण की कमी, पर्याप्त स्नेह एवं सुरक्षा का अभाव तथा हीन भावना से ग्रस्त बच्चे मिले। जब बच्चे का शारीरिक व मानसिक रूप से उनकी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है तो मनाशारीरिक समस्याएँ उत्पन्न होती है।
- मनोशारीरिक समस्याएँ उत्पन्न होने से बच्चे बिस्तर गीला करना, अंगूठा चूसना, नाखून काटना आदि समस्याओं से ग्रस्त होते हैं। अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण से यह स्पष्ट होता है कि 40: बच्चे बिस्तर गीला करते हैं, जबकि 60: बच्चों में बिस्तर गीला करने की आदत नहीं है। क्योंकि प्रारम्भ से उन्हें प्रशिक्षण दिया गया उन्हें बताया गया कि बिस्तर गीला करना बुरी बात है। जबकि 20: बच्चे दूसरों के सामने आलोचना करने पर बिस्तर गीला करते हैं। अतः माता पिता को बच्चे को प्रारम्भ से प्रशिक्षित करना चाहिए।
- 96: अभिभावक अपने बच्चे को मल–मूत्र त्याग की प्रशिक्षण देते हैं जबकि 4: अभिभावक अपने बच्चे को समय के अभाव में प्रशिक्षण नहीं दे पाते हैं। जब बच्चों में ये आदत रह जाती है तो बडे होने पर उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है जिससे बच्चे हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं।

प्रदत्तों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 90: अभिभावक अपने बच्चे से इस समस्या को पूरा करने का प्रयास करते हैं कि वे अपने बच्चे के चरित्र निर्माण करने में सहायता करते हैं जबकि 10: अभिभावक समय के अभाव में कामकाज के कारण अपने बच्चे की इस समस्या को दूर नहीं कर पाते हैं। अतः उन्हें अपने बच्चे को समय देना चाहिए जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

- विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि 24: बच्चों में अंगूठा चूसने की आदत है। कभी–कभी बच्चे नींद आने पर अंगूठा चूसते हैं। जबकि 76 बच्चे में ऐसे आदत नहीं है।
- 28: बच्चे असुरक्षित महसूस करते हैं। माता–पिता या घर के बाहर किसी व्यक्ति से भयभीत रहते हैं जिससे उनमें अंगूठा चूसने की आदत लग जाती है।
- 18: अभिभावक अपने बच्चों की जरूरत से ज्यादा पिटाई करते हैं जिससे बच्चा डर से अंगूठा चूसता है अतः अभिभावक को बच्चों से प्यार तथा सहानूभुतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए जिससे बच्चा खुद को सुरक्षित महसूस करे।
- 14: बच्चे मानसिक तनाव से ग्रस्त होकर अंगूठा चूसते हैं कभी–कभी घर से लडाई झगडा कलह, माता–पिता के गलत आचरण के कारण बच्चा असुरक्षित महसूस करता है तथा मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाता है।
- 36: बच्चे डर के कारण अंगूठा चूसते है माता–पिता द्वारा तिरस्कार तथा पर्याप्त स्नेह की कमी के कारण बच्चा डर से अंगूठा चूसता है। जबकि 20: बच्चे संवेगात्मक तनाव के कारण अंगूठा चूसता है। अतः माता–पिता को बच्चों पर ध्यान देना चाहिए।
- 90: अभिभावक अपने बच्चे की अंगूठा चूसने की आदत को दूर करने का प्रयास करते हैं वे इस समस्या का निदान करने का प्रयास करती है। जबकि 50 बच्चे ध्यान आकर्षित करने के लिए अंगूठा चूसते हैं। उनके घर में अगर उनके छोटा भाई बहन आ जाए तो उनको लगता हे अभिभावक उन पर ध्यान देते है अतः वे ध्यान आकर्षित करने के लिए अंगूठा चूसते हैं।
- प्रदत्तों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ की 30: बच्चों में मूँह से नाखून काटने की आदत है ये बच्चे मनोशारीरिक समस्यात्मक बालक है जो संवेगात्मक असंतुलन की स्थिति से उत्पन्न होती है। मूँह से नाखून काटने की आदत बढ़ जाती है जो उनकी उंगली जख्मी हो जाती है। बच्चे को उचित स्नेह नहीं प्राप्त होता है तो ध्यान आकर्षित करने कि लिए नाखून काटते है। इस समस्या को दूर करने के लिए अभिभावक को अपने बच्चों को स्नेह तथा सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए।
- 56: बच्चे मानसिक तनाव की स्थिति में नाखून मूँह से काटते हैं। भयभीत होने पर अंतरद्वंद की स्थिति में बच्चे मूँह से नाखून काटते हैं अतः माता–पिता को चाहिए की वह उसका समाधान करें तथा उस आदत को दूर करने का प्रयास करें।
- 52: बच्चे को ज्यादा गुस्सा आता है बच्चे गुस्सा कर अपनी आक्रमकता दिखाते हैं तथा मूँह से नाखून काटते हैं। ऐसे बच्चे अनुशासन विहीन समस्यात्मक बालक हैं। अतः माता–पिता को ध्यान देना चाहिए तथा धीरे–धीरे प्यार तथा सहानुभूतिपूर्वक समझना चाहिए तथा इस समस्या को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
- 44: बच्चे अकेलेपन के कारण मूँह से नाखून काटते हैं। अकेलेपन के कारण तनावग्रस्त होकर अतिरिक्त ऊर्जा का व्यय नाखून काटकर करते हैं। माता–पिता दोनों के कामकाजी होने से बच्चा अकेलापन महसूस करता है तथा हीन भावना के कारण मूँह से नाखून काटता है।
- कुछ बालक ऐसे मिले जो संवेगात्मक समस्यात्मक बालक हैं जो संवेगात्मक क्षोभ से पीड़ित हैं ये जिद्दी, क्रोधी, उदण्ड हैं इसका कारण पर्याप्त स्नेह का अभाव उपेक्षापूर्ण व्यवहार गलत संगत होना पर्याप्त पोषण न मिलना माता–पिता द्वारा अधिक लाड़ प्यार करना तथा अधिक अनुशासन में रखना या अनुशासन विहीन रखना आदि है।
- प्रदत्तों के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि 46 बच्चे झूठ बोलते है। अपनी गलती को छिपाने के लिए तथा माता–पिता, मित्र शिक्षकों के प्रति वफादारी प्रदर्शित करने के लिए बच्चे झूठ बोलते हैं। जबकि 30 बच्चे बात–बात पर झूठ बोलते हैं। वे अनुशासन विहीन समस्यात्मक बालक के अंतर्गत आते हैं। दण्ड से बचने के लिए स्वंय की सुरक्षा के लिए बच्चे बात–बात पर झूठ बोलते हैं। अतः माता–पिता को बच्चों की झूठ बोलने की आदत को हतोत्साहित करना चाहिए। कुछ अभिभावक बच्चों को बात–बात पर कठोर दण्ड देते हैं जिसके कारण बच्चा झूठ बोलता है।
- 66 बच्चे अत्याधिक कठोर अनुशासन के कारण झूठ बोलते हैं। वह भयभीत हो कर डर से दण्ड से बचने के लिए झूठ बोलते हैं। 60 बच्चे खुद को प्रदर्शित करने के लिए झूठ बोलते हैं और 64 बच्चे अपने से बड़ों का देख कर झूठ बोलते हैं। इसलिएमाता–पिता को स्वयं भी झूठ नहीं बोलना चाहिए जिससे बच्चे उनका अनुकरण करें । अतः बच्चो को प्यार से समझाने से वह समझ जाते हैं तथा सत्य बोलने पर बालकों की प्रशंसा करने से वह झूठ नहीं बोलते।
- प्रदतों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 100: माता–पिता अपने बच्चों की हर जरूरतो पर ध्यान देते हैं चाहे वे आर्थिक रूप से सम्पन्न हो या न हो किसी भी वर्ग के अभिभावक अपने बच्चे के हर जरूरतो का पूरा करने का प्रयास करते है । चाहे वे लड़का हो या लड़की 74: अभिभावक ऐसे मिले जो अपने बच्चे की हर जरूरतो को पूरा करते है । जबकि 26: अभिभावक ऐसे मिले जो अपने बच्चे की जरूरतो को पूरा नहीं कर पा रहें है । इसका कारण आर्थिक रूप से सम्पन्न न होना, या वो अपने बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने से बच्चों में विभिन्न समस्यात्मक व्यवहार जन्म लेता है । जिससे बच्चे उदण्ड, विध्वंशकारी, जिद्दी प्रकृति के होने लगते है झूठ बोलना, चोरी करना बड़ा को सम्मान न करना, आज्ञा का उल्लंघन करना आदि समस्यात्मक व्यवहार उत्पन्न होते है जिसका प्रमुख कारण आवश्यकताओं की पूर्ति नही होना है । अतः माता–पिता को बच्चे की आवश्यक आवश्यकताओं को

पूरा करना चाहिए।

- लगभग 24: बच्चों में चोरी करने की आदत है । आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने पर बच्चों में चोरी की लत पड़ गई है । निम्न आर्थिक स्थिति के कारण मात–पिता बच्चों की हर जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते । जिससे बच्चों में चोरी करने की आदत पड़ जाती है । हो सकता है माता–पिता द्वारा बच्चे की इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी गई हो, कि चोरी करना बुरी बात है । माता–पिता को अनुचित व्यवहारों में और उचित व्यवहारों में अन्तर करना समझना चाहिए । अतः माता–पिता को चाहिए की बच्चों को सामाजिक व रचनात्मक कार्यो में व्यस्त रखे । जबकि 60: बच्चे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चोरी करते है।
- प्रदत्तों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 100 अभिभावक अपने बच्चे की चोरी करने की आदत को दूर करने का प्रयास करते है ।

अतः प्रदत्तों के विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि माता–पिता को बच्चे को प्रारंभ से ही प्रशिक्षित करना चाहिए । उसे शुरू से ही अच्छी बाते सिखानी चाहिए । माता–पिता बच्चे पर ध्यान नहीं देते है जिससे बच्चा समस्यात्मक व्यवहार से ग्रस्त हो जाता है । उसे प्रारंभ से उचित अनुचित का ज्ञान नहीं करता जिससे उनका उच्च चरित्र का निर्माण नहीं हो पाता । माता–पिता के कामकाजी होने से बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते जिससे बच्चे पर गलत प्रभाव आता है । कभी माता–पिता द्वारा अत्यधिक कठोर दण्ड के मिलने के कारण भी बच्चा डरपोक भयभीत हो जाता है । जिससे उसका व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता । उनमें अनुचित व्यवहार उत्पन्न होता है । अतः माता–पिता को बच्चे से पर्याप्त स्नेह तथा सहानुभूति पूर्ण व्यवहार रखना चाहिए तथा पर्याप्त पोषण के अभाव में भी बच्चे समस्यात्मक व्यवहार करने लगते हैं । जिससे सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है । उसका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है । उसका सर्वांगिण विकास के लिए जरूरी है । उसको पर्याप्त स्नेह और प्रेम मिले । जिससे बच्चे समस्यात्मक व्यवहार से दूर रहे ।

सुझावः – सर्वेक्षण के दौरान जब हम हजारीबाग के शहरी क्षेत्र हुरहुरू के 50 अभिभावकों से मिले जिनके बच्चे 6–12 वर्ष के हैं । अभिभावकों से मिलने के बाद उनके प्रत्यक्षीकरण सूची से प्रश्न पूछने के बाद पता चला कि लगभग 75: बच्चों में किसी न किसी प्रकार के समस्यात्मक व्यवहार पाया गया । बाल विकास के अध्ययनकर्ता होन के नाते हम उन अभिभावकों को निम्न सुझाव देते है :–

- अपने बच्चे के साथ मित्र बनकर रहे ताकि वह अपनी सारी परेशानी खुल कर आपसे बता सके ।
- अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय व्यतीत करे । खास कर कामकाजी अभिभावक अपने व्यस्त समय में से थोड़ा सा समय अपने बच्चों के लिए अवश्य निकाले जिससे बच्चों को अकेलापन महसूस नहीं हो, वे सुरक्षित महसूस करे ।
- बच्चों के आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति अवश्य करें । आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने पर बच्चा संवेगात्मक तनाव से ग्रस्त हो जाता है जो विभिन्न समस्यात्मक व्यवहारों को जन्म देता है ।
- बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार को देख कर नजर अंदाज नहीं करे उन्हें उसी समय गम्भीरता से ले तथा उस समस्या को दूर करने का प्रयास करें ।
- बच्चे को कठोर अनुशासन में नही रखें बच्चों को भी अपनी बात बोलने का अवसर अवश्य दें । उनकी स्वतंत्रता को समाप्त नहीं करे बल्कि बालक को नियमों की सीमा में रखते हुए अधिकतम स्वतंत्रता दे । अत्यधिक कठोर अनुशासन में बच्चे डरपोक तथा भयभित हो जाते है ।
- बच्चों से प्रेम व सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करें । मनोशारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने पर बालक समस्यात्मक बन जाते है । अतः उन्हें सुधारने के लिए प्रेम व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए ।
- बच्चों को दूसरों के सामने आलोचना नहीं करनी चाहिए । अधिक डाट–फटकार तथा कठोर दण्ड से बच्चे उदण्ड हो जाते है ।
- माता–पिता को बच्चों की जिज्ञासाओं की संतुष्टि कर मानसिक संतोष प्रदान करना चाहिए । जब माता–पिता से प्रश्न पूछने पर बच्चे से सही उत्तर नहीं मिलता तो वह निराश व कुंठित हो जाते है । निराश व कुंठा समस्यात्मक व्यवहार को जन्म देते है ।
- बच्चे को सही मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए । सही ढंग से निर्देशन और नियंत्रण से बच्चों का भविष्य उज्जवल होता है तथा लक्ष्य की प्राप्ति होती है ।
- बच्चे को अच्छा पारिवारिक वातावरण प्रदान करना चाहिए । बच्चे के विकास के लिए परिवार का आंतरिक वातावरण खुशहाल व शांतिपूर्ण होना जरूरी है जिन परिवारों में आपसी कलह, तनाव व लड़ाई झगड़ा होता है । वहाँ बच्चे का पालन–पोषण अच्छी तरह से नहीं हो पाता तथा बच्चें का मस्तिष्क संवेगात्मक रूप से विचलित हो जाता है । जिससे बच्चे में समस्यात्मक व्यवहार उत्पन्न होने लगता है ।
- बच्चे को संवेगात्मक तथा मानसिक तनाव से दूर रखना चाहिए । उसे कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होना चाहिए । माता–पिता को बच्चे का पूर्ण समर्थन मिलना चाहिए जिससे उसका चहुमुखी विकास हो सके ।
- बच्चे के पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए । पोषण संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने से बच्चा समस्यात्मक व्यवहार से ग्रस्त हो जाता है । अतः माता–पिता को उसके उचित पोषण संबंधित आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए ।

संदर्भ

1. सिंह, अरूण कुमार एवं सिंह, आशीष कुमार ; 'व्यक्तित्व का मनोविज्ञान' ; भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स ।
2. गोस्वामी, सुबुद्धि ; 'महिला एवं बाल विकास' ; पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर – 302003 राजस्थान ।
3. अग्रवाल, नीता एवं त्रिपाठी, आकांक्षा 'मानव विकास' ; अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा –आईएसबीएन – 978–93–863
4. पारीक, आशा बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध ।
5. वर्मा, प्रमिला एवं पाण्डेय, कान्ति ; 'मानव विकास' ; साईटिफिक बुक कम्पनी, अशोक राजपथ, पटना – 800004 ।
6. श्रीवास्तव, डी एन एवं वर्मा, प्रीति ; 'बाल मनोविज्ञान : बाल विकास' ; अग्रवाल पब्लिकेशन्स आईसो 9001 : 2008 सर्टिफिकेट कम्पनी ।
7. दास, भगवान : 'बाल विकास' ; ओमेगा पब्लिकेशन्स ; नई दिल्ली 110002
8. अस्थना, विपिन एवं अग्रवाल, रामनारायण : 'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन' ; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।
9. स्वामी, कुप्पु ; 'बी टेक्स्ट बुक ऑफ चाइल्ड वीहावियर ऑफ डेवेलपमेंट' ; विकास पब्लिशिंग हाउस – 1976 ।
10. पाठक, पी.डी. : 'शिक्षा मनोविज्ञान' ; अग्रवाल पब्लिकेशन, आईसो 9001. 2008 सर्टिफिकेट कम्पनी ।
11. चतुर्वेदी, ममता : 'शिक्षा मनोविज्ञान' अग्रवाल ; पब्लिकेशन, आईसो 900 2008 सर्टिफिकेट कम्पनी ।
12. पारीक, मयुरेश्वर 'बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध' ; रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली जयपुर ।
13. हरलॉक, ई. बी ; 'चाइल्ड डेवेलपमेंट' ; हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित ।